International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 02(III), April- June, 2025, pp. 39-48

ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के मतदान व्यवहार एवं राजनीतिक भूमिका में अन्तर (ग्रामीण एवं शहरी महिला मतदाताओं पर किया गया एक तुलनात्मक अध्ययन)

सुमन सिंह*

सहायक प्रवक्ता, सतत् शिक्षा विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

*Corresponding Author: sumansingh@ignou.ac.in

सार

इतिहास गवाह है कि महिलाओं ने न सिर्फ आजादी के महायज्ञ में अपनी आहुति दी है बल्कि राजनीतिक क्षेत्र में भी अपना परचम फहराया है उनकी इस भूमिकाओं को जानने के लिए यह शोध किया गया है। इस शोध का उद्देश्य ग्रामीण एंव शहरी महिलाओं के मतदान व्यवहार एवं राजनैतिक क्षेत्र में उनकी भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करना था यह अध्ययन वाराणसी जिले के 4 शहरी एंव 4 ग्रामीण क्षेत्र की महिला मतदाताओं पर किया गया है। वाराणसी जिले का चयन उद्देश्यपरक विधि द्वारा किया गया है। क्षेत्र चयन के अन्तर्गत सर्वप्रथम, भारत एक सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है. एवं इसमें मतदाताओं की संख्या सबसे अधिक है। इसलिये भारत देश के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश में स्थित वाराणसी जिले का चयन किया गया है। इस तुलनात्मक अध्ययन में कुल मिलाकर 8 क्षेत्रों, 4 शहरी एंव 4 ग्रामीण क्षेत्र का चयन उद्देश्यपरक विधि द्वारा किया गया है 8 क्षेत्रों से कुल 400 प्रतिदर्श के आकार का चयन किया गया है जिसमें 217 ग्रामीण व 183 शहरी क्षेत्र से लिये गये हैं प्रतिदर्श के आकार का चयन यामिन्स सूत्र से किया गया है आँकड़ा संग्रह एंव साक्षात्कार, यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। इस अध्ययन के परिणाम में यह पाया गया कि, मतदान सम्बन्धित व्यवहार एवं राजनीतिक क्षेत्र सम्बन्धित कार्यों में शहरी महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी एवं योगदान अधिक है, शहरी महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण महिलायें बेहतर स्थिति में है। 90.8 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं राजनैतिक गतितिधियों में बढ.चढ़कर भाग लेती हैं, जागरुकता भी अधिक पाया गया जो कि शहरी महिलाओं के प्रतिशत से अधिक है। ग्रामीण महिलाओं का मतदान व्यवहार में भागीदारी भी सराहनीय रही एव सकारात्मक व सुखद परिणाम पाया गया। यह बहुत ही आश्चर्यजनक तथ्य पाया गया कि जो सामान्य मानसिकता व विचार धारा समाज में बनी हुई है। शिक्षित शहरी महिलायें अधिक सक्रिय, जागरूक है, परन्तु अध्ययन में ठीक इसके विपरीत परिणाम देखा गया। निम्नतम शिक्षा, संसाधनों के बावजूद, रसोईं एंव कृषि कार्यों में व्यस्तता के बाद भी उनकी सहभागिता की अधिक है एवं जानकारी व सहभाग करने की ललक भी अधिक है वहीं दूसरी ओर शहरी क्षेत्र की महिला शिक्षा साधन सम्पन्न होने के बावजूद भी उनमें उदासीनता एवं अरूचि देखी गई।

शब्दकोशः *ग्रामीण, शहरी, जागरूकता, भागीदारी, महिला, मतदाता, प्रतिशत लोकतत्रं सहभागिता, राजनैतिक उत्तरदात्रियां।*

प्रस्तावना

ऐतिहासिक परिचय

दिन की रोशनी ख्वाबों को बनाने में गुजर गई
रात की नींद बच्चों को सुलाने में गुजर गई

जिस घर में मेरे नाम की तख्ती भी नहीं
सारी उम्र उस घर को सजाने में गुजर गई

उपर्युक्त पंक्ति आज पूर्णतया : मिथ्या साबित हो रही है। अब वह समय नहीं रहा। आज 21वीं सदी की नारियाँ आसमाँ छू चुकीं बहुत पहले अब सितारों की तरह जगमगा रही है खुदी को खुद बुलंदियों पर ले जा रही हैं एक समय था कि कहीं किसी गाँव कस्बे में लडकियाँ साइकिल चलाई तो नई बात हुआ करती थी समय चक्र ऐसा घूमा कि आज हवाई जहाज भी चलाये तो आम बात होती है गणित पढ़ना लड़कों का विषय समझा जाता था आज यह विचार हास्यास्पद होगा। अतः सभी क्षेत्रों में महिलायें दूसरों का मुँह देखने के बजाय स्वयं आँकलन कर रही है। किसी शायर ने लिखा है। कि तू इस आँचल से परचम बना लेती तो अच्छा था, इस दौर की महिलाओं ने आँचल से परचम बना भी लिया ।

वर्तमान परिदृश्य

हम सभी प्रत्येक व्यक्ति हमारे देश की सभी व्यवस्थाओं से जुड़े हुये है। पिछले अनेक सालों के भारत के लोकतन्त्र की राजनीतिक व्यवस्था ने यह सिद्ध किया है कि यह एक जीवन पद्धति हैं। चुनावों में गिनती करते समय अगर महिलाओं की संख्या 10 फिसदी से कम है। अगर यह अखरे तो धर्मगुरूओं की उस तकरीर पर नजर डालिएगा जिन्होंनें यह कहा था कि महिलाओं का काम लीडर बनना नहीं लीडर पैदा करना है। यही वह सोच है जिसनें महिलाओं के लिए राजनीतिक क्षेत्र की तरफ जाने वाले गलियारे को संकरा कर दिया है। परन्तु आज यह मिथक भी टूटा है खेत से अन्तरिक्ष तक के कई अन्य आयाम महिलाओं की बढ़ती हैसियत की गवाही दे रहे हैं। और अहम फैसलों में भागीदारी भी बढ रही है यकिनन क्रांतिकारी परिवर्तन हुये हैं। परन्तु सम्पूर्ण जनसंख्या के अनुपात में उनकी संख्या बहुत कम है अधिकांश सीमा तक महिलायें ही स्वंय राजनैतिक क्षेत्र को आज भी पुरूषों का क्षेत्र ही समझती है हम केवल उन महिलाओं की बात नहीं करते जो किसी रूप में चुनकर सामने आई हैं नेतृत्व भी कर रही हैं। बल्कि उस बड़े वर्ग की बात है जो आधी आबादी का हिस्सा है। महिलाओं के सर्वांगीण सशातिकरण व विकास में राजनीतिक क्षेत्र का विकास भी अत्यन्त आवश्यक है। यहाँ से नेतृत्व व निर्णय क्षमता का विकास भी होता है अतः इन्हीं जिज्ञाशाओं के आधार पर यह तुलनात्मक शोध किया गया है जिसका उददेश्य ग्रामीण व शहरी महिलाओं के मतदान व्यवहार व राजनीतिक भूमिका मे अंतर है इस विषय से सम्बन्धित अध्ययनों में पाया गया कि, (कराट वृन्दा) 2005 दिल्ली विश्वविद्यालय,– महिलाओं की स्थिति में आपत्तिजनक विघटन को देखा जाय तो राजनीति से जुडे सफल पुरूषों के पीछे वह महिला ही है जिसे स्वंय उन अवसरों से वंचित हाना पड़ता है। वर्ष 2013 के राजनैतिक चुनावी परिणाम के अध्ययनों के आधार पर, यद्यपि महिला मतदात्रियों की संख्या बढ रही है मगर महिला उम्मीदवारों की संख्या निराशाजनक रही है वर्ष 2012 के चुनावों में इन राज्यों में महिला मतदातत्रियों की संख्या 4.65 एंव 8.62 प्रतिशत के बीच रही है। इससे यह जाहिर होता है कि राजनैतिक दल महिलाओं को बराबरी का मौका देने का दिखावा करते है । इसमें शहरी क्षेत्र की राजनैतिक भागीदारी में उदासीनता रही है उपेक्षाकृत ग्रामीण महिलाओं के।

उददेश्य

- मतदाताओं की समाजिक आर्थिक एवं व्यक्तिगत पृष्ठभूमि का अध्ययन।
- ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के मतदान व्यवहार एवं राजनीतिक भूमिका में अन्तर_का अध्ययन।

शोध प्रश्न

- क्या मतदान के प्रति ग्रमीण महिलाओं में जागरूकता आई हैं?
- क्या शहरी महिलाओं में जागरूकता ग्रमीण महिलाओं की अपेक्षा अधिक है?
- क्या शहरी महिलाएँ मतदान में अधिक बढ़–चढ़ कर सहभागिता देती हैं?

- क्या पूर्व की अपेक्षा वर्तमान में समय में मतदान,राजनैतिक सहभागिता राजनैतिक जागरूकता के क्षेत्र में महिलाओं की सकियता बढ़ी है?
- पूर्व की अपेक्षा आज की चुनावी प्रकिया में प्रचार–प्रसार के तरीको मे परिर्वतन आया है?
- क्या लोकतंत्र के गठन एवं मतदान में भूमिका बढी है व चुनावी व्यवहार में परिर्वतन आया है?
- क्या वर्तमान समय में वोट देने के प्रति , वोट देने के कारणो के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण बदला है?

शोध की आवश्यकता

- यह शोध भविष्य में होने वाले मतदान के प्रति पथ प्रदर्शक की भूमिका निभायेगा। मतदान के प्रति सहभागिता को बढायेगा कान्तिकारी परिणाम के कारणो को प्रस्तुत करेगा। जिससे भविष्य में चुनाव प्रकिया जनता के व्यवहार ग्रामीण शहरी महिला मतदाताओ के व्यवहार में अंन्तर चुनाव .कार्य–प्रणाली प्रचार–प्रसार में मदद मिलेगी और जागरूकता लाने तथा लोकतान्त्रिक प्रणाली को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगा।
- इस शोध से यह प्रयास सुनिश्चित होगा कि वोट के लिए व्यक्ति को किस प्रकार से कटिबद्ध होना चाहिए जिसका उसके मानसिक विमुखता एवं विविध प्रकार के समसायिक परिर्वतन का प्रकार है।
- पिछले चुनाव में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की सहभागिता के आधार पर अग्रिम चुनावी रणनीति तैयार करनें में सहयोग करेगा।
- चुनावी प्रकिया में प्रचार–प्रसार माध्यमो सोशल मिडिया व ट्रेडिशनल मिडिया की सहभागिता के बारे मे बतायेगा इससे यह पता चलेगा की महिला मतदाता की जागरूकता में कौन कौन से माध्यम सहायक होते हैं। किन किन माध्यमो का प्रयोग करना चाहिए।
- लोकतन्त्र कार्यप्रणाली के बारे में जनता के दृष्टिकोण एवं विचारो का पता चलेगा एवम आधी आबादी की सहभागिता सुनिश्चित करेगा।

शोधविधि

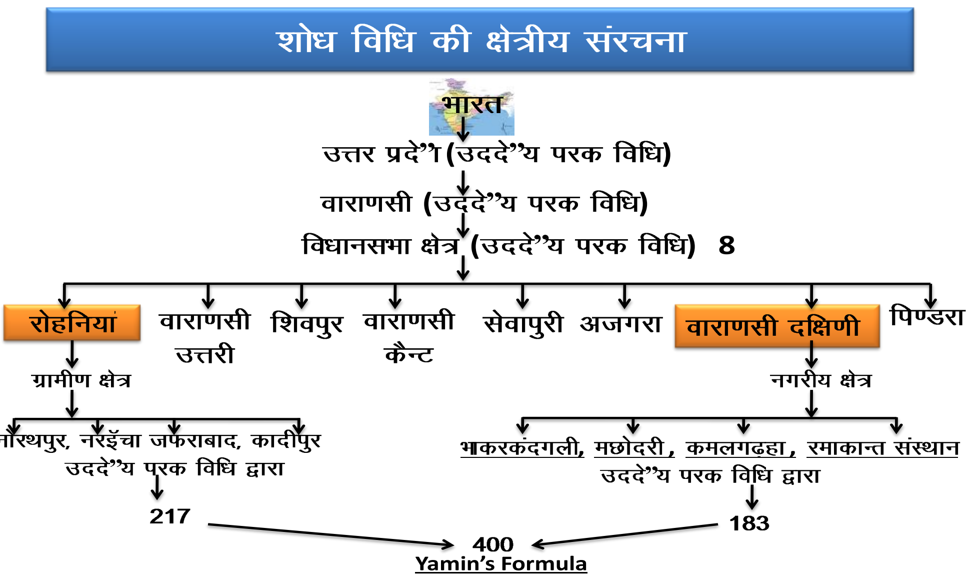

क्षेत्र का चुनाव

शोध विधि की प्रक्रिया में सर्वप्रथम क्षेत्र के चुनाव के अन्तर्गत भारत के उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के अन्तर्गत 2 विधानसभा रोहनियाँ एंव वाराणसी दक्षिणी क्षेत्रों में से कुल 8 क्षेत्र 4 शहरी एंव 4 ग्रामीण क्षेत्र क्रमशः मनोरथपुर जफराबाद, नरइचा, कादीपुर, मछोदरी, शकरकंन्द गली टीकमणी रमाकान्त सेवा संस्थान क्षेत्र का चयन उददेश्य परक विधि से किया गया है।

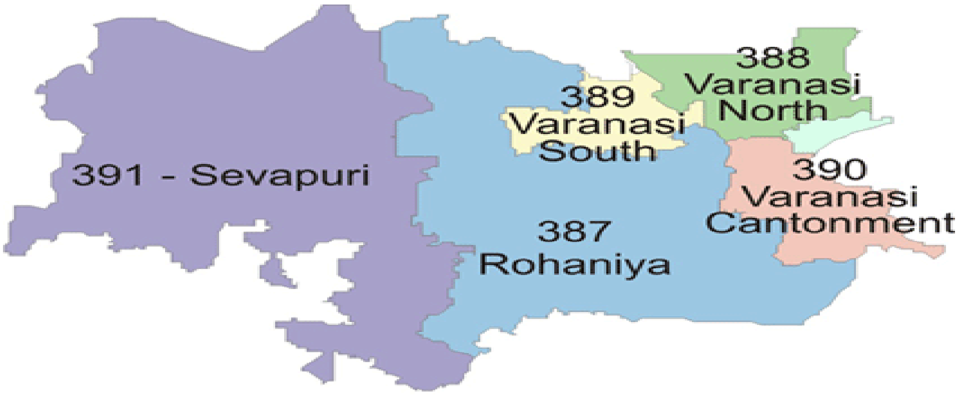

वाराणसी विधानसभा का भौगोलिक मानचित्र

उत्तरदाताओं की चयन विधि

चयनित कुल 8 क्षेत्रों में कुल महिला मतदाताओं मे से आनुपातिक विधि द्वारा कुल 400 महिला उत्तरदात्रियों का चयन किया गया है। जिसमें 18 वर्ष व उससे अधिक आयु वर्ग के सभी उत्त्रदात्रियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

	क्षेत्र	कुल महिला मतदाता	चयनित उतरदात्रियॉ
रोहनियाँ		136515	217
वाराणसी दक्षिणी		114681	183
कुल योग		251196	
ग्रामीण क्षेत्र			
1	मनोरथपुर	330	50
2	नरइँचा	302	46
3	जफराबाद	247	38
4	कादीपुर	541	83
कुल योग		1420	217
नगरीय क्षेत्र			
1	शकरकंदगली	511	62
2	मछोदरी	443	53
3	कमलगढ़हा	253	31
4	रमाकान्त संस्थान	307	37
	कुल योग	1514	183

Source : Vikas Bhawan (Varanasi)

आँकड़ा संकलन पद्धति

- **आँकडा सकंलन के प्राथमिक स्रोत :—** प्राथमिक आँकडों के संकलन हेतु प्रश्नावली अनुसूची एंव साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। उपकरणों के अन्तर्गत बी.जी.प्रसाद मापनी, लिकर्ट मापनी, एव टी—परीक्षण आदि का प्रयोग किया गया है

- **आँकड़ा संकलन के द्वितीयक स्त्रोंत :–** इसके अन्तर्गत लोकसभा चुनाव से सम्बन्धित जिसमें महिलाओं की भागीदारी सम्बन्धित दस्तावेज़, विकास भवन, केन्द्रीय ग्रंथालय पुस्तक अखबार पत्र–पत्रिकाओं आदि का प्रयोग किया गया है।
- **आँकडों का विश्लेषण** :– आँकड़ों के विश्लेषण के लिए आवश्यकतानुसार उचित उपकरणों व तकनीकि का प्रयोग किया गया है। जैसे –माध्य, मध्यमान, माध्यिका, प्रतिशत सारणी, परीक्षण मापनी आँकडों के विश्लेषण को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने के लिए तालिका सारणी, पाईचित्र, रेखाचित्र बार डायग्राम आदि का प्रयोग किया गया है।

परिणाम एंव परिचर्चा

ग्रामीण एंव शहरी महिलाओं के मतदान व्यवहार एंव राजनीतिक भूमिका में अन्तर को जानने के लिए इसका तुलनात्मक अध्ययन वाराणसी जिले के रोहनियां एंव वाराणसी दक्षिणी विधानसभा क्षेत्रों के मनोरथपुर, नरइचा, जफराबाद कादीपुर, मनोरथपुर, मछोदरी, कमलगड़हा, शकरकद–गली, रमाकान्त सेवा संस्थान क्षेत्र संस्थान क्षेत्र में सर्वेक्षण व अध्ययन के पश्चात परिणाम एंव परिचर्चा अग्रलिखित हैं।

तालिका 1ः राजनीति में महिलाओं द्वारा जनप्रतिनिधित्व करने की क्षमता के सम्बन्ध उत्तरदात्रियों के विचारों के आधार पर विवरण

	राजनीति में जनप्रतिनिधित्व करने की क्षमता	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रतिनिधित्व करने की क्षमता होती हो	396	99.0
2.	प्रतिनिधित्व करने की क्षमता नहीं होती हैं	4	1.0
	योग	400	100.0

सारणी संख्या 1 में यह जाना एवं दर्शाया गया है कि राजनीतिक क्षेत्र में ,महिलाओं में जन–प्रतिनिधित्व करने की क्षमता होती है, जिसके संदर्भ में यह पाया गया कि 99 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि महिलाओं में जन–प्रतिनिधित्व करने की क्षमता होती है एवं केवल 1.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि महिलाओं में क्षमता नहीं होती है। 99.0 प्रतिशत महिलाओं का यह मानना है कि क्षमता होती है। यह एक अत्यन्त सार्थक एंव क्रांतिकारी परिवर्तन तथा महिला सशक्तिकरण में एक कदम है। कहा जाता है कि महिलायें ही महिलाओं की शत्रु होती है, लेकिन इस सारणी में यह उक्ति खण्डित हुई है। अधिकांश उत्तदात्रियों की आवाज महिलाओं के पक्ष में बुलंद हुई है। 99 प्रतिशत अर्थात् कुल 400 में से 396 उत्तरदात्रियों ने महिलाओं के पक्ष में सुखद अभिव्यक्ति की है।

तालिका 2ः लोकसभा चुनाव में ग्रामीण महिलाओं के रूझान के प्रति उत्तरदात्रियों के दृष्टिकोण का वर्गीकरण

		स्थायी निवास					
दृष्टिकोण		नगरीय		ग्रामीण		योग	
		सं0	**प्रतिशत**	**सं0**	**प्रतिशत**	**सं0**	**प्रतिशत**
1.	बहुत अधिक	163	89.1	197	90.8	360	90.0
2.	अधिक	14	7.6	10	4.6	24	6.0
3.	कम	4	2.2	2	0.9	6	1.5
4.	बहुत कम	2	1.1	3	3.7	10	2.5
	योग	183	100.0	217	100.0	400	100.0

$X^2 = 5.29\ df = 3p > 0.05$

सारणी संख्या– 2 **इस सारणी में ग्रामीण महिलाओं का रूझान जाना गया जिसमें यह पाया गया कि 90.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि 2014 के चुनाव में ग्रामीण महिलाओं का रूझान बहुत अधिक था**, 6. 0 प्रतिशत नगरीय एवं ग्रामीण उत्तरदात्रियों के विचारों के अनुसार पाया गया कि 89.1 प्रतिशत नगरीय उत्तरदात्रियों के अनुसार रूझान बहुत अधिक था, 7.6 प्रतिशत के अनुसार रूझान अधिक था, 2.2 प्रतिशत के

अनुसार रूझान कम था. 1.1 प्रतिशत के अनुसार रूझान बहुत कम था।90.8 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदात्रियों के अनुसार रूझान बहुत अधिक था, 4.6 प्रतिशत का मानना है कि रूझान अधिक है, 0.9 प्रतिशत के अनुसार रूझान कम था, 3.7 प्रतिशत के अनुसार रूझान बहुत कम था।

तालिका 3ः लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी को विजयी बनाने हेतु प्रमुख भूमिकाओं का निर्वहन करने के प्रति नगरीय तथा ग्रामीण उत्तरदात्रियों को वर्गीकरण

प्रमुख भूमिका		नगरीय		ग्रामीण		योग	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
1.	केवल वोट देना	137	74.9	127	58.6	264	66.0
2.	वोट एंव रैली व सभा में जाना	39	21.3	76	35.0	115	28.7
3.	वोट व विभिन्न वस्तुओं एवं वोट बनाम नोट इत्यादि के वितरण में सहायता देना	5	2.7	2	0.9	7	1.8
4.	उपरोक्त सभी	2	1.1	12	5.5	14	3.5
5.	योग	183	100.0	217	100.0	400	100.0

$X^2$17.95 df= 3, P < 0.001

सारणी संख्या 3 प्रस्तुत सारणी में लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी को विजयी बनाने हेतु भूमिकाओं के निर्वहन को दर्शाया गया है, जिसमें यह पाया गया कि 66.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने केवल वोट देकर अपनी सहभागिता प्रदान की, 28.7 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने वोट रैली व जनसभाओं में भी जाकर अपनी सहभागिता निभाई, 1.8 प्रशित ने, रैली प्रचार प्रसार इत्यादि में विभिन्न आकर्षक वस्तुओं के वितरण में सहायता की तथा 3.5 प्रतिशत उत्तरात्रियँा ने सभी प्रकार से अपनी भूमिका निभाई केवल वोट देने में 74.9 प्रतिशत नगरीय व 58.6 प्रतिशत ग्रामीण महिलायें है। वोट देने रैली व जनसभा में जाने में 21.3 प्रतिशत नगरीय एवं 35.0 प्रतिशत ग्रामीण हैं।वोट देने विभिन्न वस्तुओं के वितरण में 2.7 प्रतिशत नगरीय एवं 0.9 प्रतिशत ग्रामीण हैं।उपरोक्त सभी प्रकार से भूमिका निभाने में 1.1 प्रतिशत नगरीय एवं 5.5 प्रतिशत ग्रामीण अत्तरदात्रियाँ हैं।

सारणी 4ः पुरुषों के सापेक्ष कम शिक्षित होने के बावजूद महिलाओं का मतदान के प्रति अधिक सचेत होने एवं जागरुकता के सम्बन्ध में नगरीय तथा ग्रामीण उत्तरदात्रियों के विचारों का वर्गीकरण

अधिक जागरूक एव सचेत होती है		स्थायी निवास स्थान					
		नगरीय		ग्रामीण		योग	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
1.	हाँ	174	95.1	210	96.8	384	96.0
2.	नहीं	9	4.9	7	3.2	16	4.0
	योग	163	100.0	217	100.0	400	100.0

X^2 0.74, df 1, P < 0.05

सारणी संख्या– 4 में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का कम शिक्षित होने के बावजूद मतदान के प्रति जागरूकता को दर्शाया गया है, जिसमें यह पाया गया कि 96.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलायें कम शिक्षित होने के बावजूद मतदान के प्रति अधिक सचेत एवं जागरूक होती हैं जिनमें से 95. 1 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ नगरीय हैं तथा **96.8 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ ग्रामीण हैं** एवं 4.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि महिलायें पुरुषों की अपेक्षा मतदान के प्रति अधिक जागरूक नहीं हैं जिनमें से 4.9 प्रतिशत नगरीय हैं एवं 3.2 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ग्रामीण हैं।

सारणी 5 : राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं को आरक्षण मिलने से राजनीति सहभागिता वृद्धि के विभिन्न कारणों के आधार पर नगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का वर्गीकरण

		निवास स्थान					
सहभागिता वृद्धि के कारण		**नगरीय**		**ग्रामीण**		**योग**	
1.	राजनीति में आने का अवसर प्राप्त होना	14	51.9	109	86.5	123	80.4
2.	परिवारिक सहयोग मिलना	7	25.9	9	7.1	16	10.5
3.	अन्य महिलाओं द्वारा प्रोत्साहन	6	22.2	8	6.3	14	9.1
	योग	27	100.0	126	100.0	153	100.0

X^2 16.95, of 2, < 0.01

सारणी संख्या – 5 प्रस्तुत सारणी में आरक्षण के कारण सहभागिता–जागरूकता में वृद्धि के प्रमुख कारणों के प्रति उत्तरदाताओं के विचारों को दर्शाया गया है, जिसमें यह पाया गया कि 80.4 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ राजनीति में अवसर प्राप्त होने को प्रमुख कारण मानती है, 10.5 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ पारिवारिक सहयोग के मिलने को प्रमुख कारण मानती हैं तथा 9.1 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अन्य राजनीतिज्ञ महिलाओं द्वारा प्रोत्साहन को प्रमुख कारण मानती हैं।नगरीय आधार पर 51.9 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ राजनीति में अवसर प्राप्त होने को प्रमुख

कारण मानती हैं। 25.9 प्रतिशत पारिवारिक सहयोग को तथा 22.2 प्रतिशत नगरीय उत्तरदात्रियाँ अन्य महिलाओं द्वारा प्रोत्साहन को मुख्य कारण मानती है। ग्रामीण आधार पर 86.3 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ राजनीति में अवसर प्राप्त होने को प्रमुख कारण मानती हैं। 7.1 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ पारिवारिक सहयोग को तथा 6.3 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ दूसरी महिलाओं द्वारा प्रोत्साहन को प्रमुख कारण मानती है जिसके द्वारा राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि हुई हैं।

सारणी 6: महिलाओं में जागरूकता एवं सहभागिता में वृद्धि के विभिन्न कारणों के प्रति नगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के विचारों का वर्गीकरण

स्थायी निवास स्थान							
जागरूकता के कारण		नगरीय		ग्रामीण		योग	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
1.	शैक्षिक स्तर में वृद्धि	161	89.5	205	94.5	366	92.2
2.	संचार माध्यम	–	–	–	–	–	–
3.	पदों का आकर्षण	–	–	–	–	–	–
4.	आरक्षण	–	–	–	–	–	–
5.	12	8	4.4	4	1.8	12	3.0
6.	13	4	2.2	3	1.4	7	1.8
7.	14	7	3.9	5	2.3	12	3.0
योग		180	100.0	217	100.0	397	100.0

X^2 *3.68, df = 3, P< 0.05*

सारणी संख्या 6 में, राजनीति में जागरूकता एवं सहभागिता में वृद्धि के कारणों को दर्शाया गया है जिसमें उत्तरदात्रियों का मानना है, राजनीति में जागरूकता एंव सहभागिता में वृद्धि हुई है उनमें से 92.2 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ यह मानती हैं कि शिक्षा स्तर में वृद्धि के कारण जागरूकता एवं सहभागिता बढ़ी है, 3.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का शैक्षिक स्तर तथा संचार माध्यमों को वृद्धि का कारण मानती है, 1.8 प्रतिशत के अनुसार शैक्षिक स्तर में वृद्धि तथा राजनीतिक पदो के आकर्षण के कारण जागरूकता एवं सहभागिता में वृद्धि का प्रमुख कारण मानती हैं। महिलाओं में शिक्षा के कारण ही यह सहभागिता आई है जो कि शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। साथ–साथ संचार माध्यम पदों का आकर्षण एवं आरक्षण भी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी कारक हैं।

सारणी 7: राजनीति में महिला मतदाताओं की जागरूकता एंव सहभागिता में वृद्धि के सम्बन्ध में उत्तरदात्रियों के विचारों का वर्गीकरण

जागरूकता एंव सहभागिता में वृद्धि होने के प्रति विचार		संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	397	99.2
2.	नहीं	03	0.8
योग		400	100.00

उपर्युक्त सारणी में राजनीति में महिला मतदाताओं की जागरूकता एवं सहभागिता में वृद्धि के सम्बन्ध में उत्तरदात्रियों के विचारों को दर्शाया गया है, जिसमें यह पाया गया कि 99.2 प्रतिशत उत्तरदत्रियों का मानना है कि राजनीति में महिला मतदाताओं की जागरूकता एवं सहभागिता बढ़ी है तथा 0.8 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को यह लगता है कि नहीं बढ़ी है। यद्यपि मात्र 2 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ ही प्रत्यक्ष रूप से किसी राजनीतिक दल से जुड़ी है। परन्तु यह सकारात्मक नजरिया है कि राजनीति में महिला मतदाताओं की सहभागिता में वृद्धि हुई है।

रणनीति | चुनाव प्रचार से लेकर चुनावी चकल्लस का दौर हुआ तेज

शहर में डोर–डोर, गांव में डांड़–डांड़

ए सुनीता, केके वोटवा देबू

पीएम के सांसद आदर्श गांव नागेपुर की पगडंडियों के किनारे दोपहर में महिलाएं घास काटती मिलीं। पार्वती, रेखा, नीलम और सुनीता। ये चारों ही पडोसी गांव कल्लीपुर की हैं। घास काटते–काटते चुनाव की बतकही करती दिखीं तो कदम ठिठक गए। कान में बस इतने ही शब्द पड़े कि "ए सुनीता, केके वोटवा देबू"। महिलाओं से चुनाव के बारे में बात की गई तो उन्होंने कहा कि वे हर बार वोट जरूर देने जाती हैं। पति द्वारा किसी को वोट देने को कहा तो जाता है लेकिन वे

सारांश

इस शोध में प्राप्त परिणाम के आधार पर शहरी महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण महिलायें अधिक सशक्त जागरूक सक्रिय एंव जानकारियों से अवगत है जहाँ एक ओर 78 प्रतिशत ग्रामीण महिलायें अपनी सक्रिय भूमिका निभाती है वहीं दूसरी और नगरीय महिलाओं का प्रतिशत 47.0 है बहुत बडा अंतर पाया गया है। यह आश्चर्य की बात है कि जिस तबके को पूर्णतया : निष्क्रिय पिछड़ा अज्ञानी–अनविज्ञ समझा गया है वे अहम भूमिका में हैं और जिन्हें समाज बुद्धिजीवी समझता है उम्मीद करता है। उनकी भूमिका नगण्य है। हमारे समाज का बहुत बड़ा वर्ग महिलाओं का है महिलाओं में राजनैतिक जागरूकता की कमी इनके संर्वागीण सशक्तिकरण के आड़े आती है। अभी भी कहीं–कहीं पुरूष के अधीन रह कर निर्णय लेती हैं। व्यक्तिगत राय नहीं है एक तरफ घूँघँट, बुर्के में ढ़की हुई स्त्री या लाठी टेककर चलने वाली व वृद्धा ग्रामीण क्षेत्र में बहुत सक्रिय हैं। वहीं शहरी क्षेत्र की महिलाओं में राजनैतिक गतिविधियों में अरूचि, असहयोग जानकारी का न होना पाया गया। उदासीनता दिखाई पडती है। शहरी क्षेत्र बारे में प्रायः यह धारणा है कि शहरी क्षेत्र की महिलायें अधिक शिक्षित, समझदार, जागरूक उत्साहित व सहयोगी रवैया रखती है। व ग्रामीण महिलायें अशिक्षित अनविज्ञ होती हैं। शहरी क्षेत्र की महिलाओं की सहभागिता अधिक होनी चाहिए जो कि नहीं होती है 57.7 प्रतिशत ग्रामीण महिलायें 78.3 प्रतिशत महिलायें राजनीतिक दलों को महत्व देती है 66.8 ग्रामीण एंव 40 प्रतिशत शहरी महिलाओं का मानना है कि महिला नेता ईमानदार होती है यह सकारात्मकता व विश्वास की स्थिति को दर्शाता है शहरी, ग्रामीण दोंनों (97.3 प्रतिशत) महिलाओं का मानना यह था कि ग्रामीण महिलायें ही अधिक जागरूक होती है वे रैली राजनैतिक गतिविधियों में स्वंय कहो तो भी नहीं जाती वही ग्रामीण महिलायें एक दूसरे को देखकर भी इन गतिविधियों में भाग लेती है उनकी सहभागिता ,सक्रियता अधिक होती है।

निष्कर्ष

भारत में महिलायें हमेशा से ही राजनीति में सक्रिय रही है 'उन्होंने अपनी समस्त जिम्मेदारियों में संतुलन बैठाने के साथ साथ राजनीतिक जिम्मेदारियों को भी बेहतर ढंग से पूरा किया है। बड़ी शान से राजनीति की दहलीज पार कर रही हैं। बदलते दौर के साथ आज महिलाओं की कामयाबी अलग से रेखांकित करने योग्य है महिलाओं की सहभागिता की शौर्य गाथायें प्रत्येक जनों में ऊर्जा का संचार करती हैं। उन्होंनें सदैव से ही एक अपना प्रभावी दखल रखा है इनका राजनैतिक गतिविधियों मे बढ़ चढ़ कर भाग लेना बहुत अच्छा सकेंत है। इससे उनसे जुड़े मुद्दे भी प्रकाश में आ रहे हैं। आज भारत में अनेक महिलायें हैं जो उभर कर सामने आई हैं यह नेतृत्व क्षमता व स्वस्थापना तथा सेवा का विस्तृत अवसर प्रदान करता है। जिस प्रकार से आपके मताधिकार है। उसी प्रकार से राजनैतिक अधिकार भी ही आज महिलायें किसी भी दल की दशा– दिशा बदलने में सक्षम है। सबके साथ.साथ जब तक महिलायें राजनैतिक धरातल पर सशक्त नहीं होंगी तब तक उनके विकास का क्रम पूर्ण नहीं होगा।

अब न तुझको डरना है बस चलना है अविराम

छुने को बाकी है अभी तेरे कई आयाम

सुझाव

- छोटे–2 स्तर पर राजनैतिक जागरूकता कार्यक्रम एवं अभियान चलाने की आवश्यकता है।
- महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है ताकि वे केवल अपनी आवश्यकता जरूरत से उपर उठकर देशहित के बारे में भी सोच सकें, नजरिया बदल सके।
- प्रत्याशियों को जमीनी स्तर पर काम करने की आवश्यकता है वे अपना कार्य करें जिसके लिए वे चुने गये हैं ईमानदारी, जिम्मेदारी का आह्वान ही इस शोध का सुझाव है।
- जिस कार प्रत्याशी वोट मागने के लिए चुनाव के समय प्रतिव्यक्ति में रूचि लेता है, उनके पास तक जाता है। चाहे व अनजान ही क्यो न हो, उसे भलीभाँति जानते हों या न जानते है, ठीक उसी प्रकार चुनाव जीतने के बाद भी वही व्यवहार अपनाना होगा।
- महिलाओं में जागरूकता लाने की आवश्यकता है जिससे वे कोई भी कार्य या सवालों के जबाव स्वयं दे सकें ना कि पति से पूछकर।
- शिक्षित व बुद्धजीवी वर्ग को जागने की व पुरानी पीढ़ी से चली आ रही रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था तथा पुरुष प्रधानवादी मानसिकता में परिवर्तन की आवश्यकता है।
- जनतंत्र की नींव मताधिकार पर रखी जाती है कोई भी दौर हो ब्यक्ति कहीं भी रहे किंतु मतदान में उसे हर हाल में भाग लेना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह सुमन, पंचायत चुनाव में जनसहभागिता 2011 पृष्ठ संख्या 23.
2. Journal of education volume, 1-issue, 2 July, 2013 page no-6.
3. दैनिक जागरण 12 फरवरी 2017, पृष्ठ संख्या, 11–12.
4. लोकतन्त्र की चुनौतियाँ, पृष्ठ संख्या –102.
5. गुप्त चन्द्रकान्त, लोकसभा में विपक्ष की भूमिका, पृष्ठ संख्या–35–6.
6. योजना जुलाई, 2014 पृष्ठ संख्या, 4–5–6.
7. Jurnal of education volume-1, issume 2 July, 2013 page no-6.
8. रंजन राजीव लोकसभा चुनाव एवं राजनीति ज्ञान गंगा प्रकाशन प्रथम संस्करण वर्ष–2000.
9. विकास भवन निर्वाचन विभाग (प्रथम तल)
10. श्रीमती शर्मा सन्तोष लोकसभा मध्यावधी चुनाव वे राजनीतिक, विशिष्ट वर्ग का दृष्टिकोण, प्रथम संस्करण–1983, पृष्ठ संख्या–1,4–10, 19,33–40,4 71–78, 80,81,96,109,111,114.
11. माथुर एल.पी., भारत की महिला स्वतन्त्रता सेनानी, डा.एल. सुखडिया विश्व संख्या 58–61, 143ण
12. शरण परमात्मा, प्राचीन भारत के राजनीतिक विचारक एवं संस्थाएँ मीनाक्षी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–293.

❖◆❖